स्वस्थ बीज हमेशा रसीले फल देते हैं। जब आप किसी इंसान की मृत्यु से लेकर जन्म तक के सफर की पड़ताल करते हैं, तो इस प्रक्रिया में आपके सामने बहुत-से रहस्यों का खुलासा होता है। गुरुदेव की जीवनी में शिव के सर्व विद्यमान रहने वाले गुण, बचपन से शामिल थे, जैसा कि ऋषि भृगु ने पूर्व में देखा था।

शुरुआती साल

अगर ईश्वर का जन्म किसी प्राणी के रूप में हो तो उन्हें उसी प्राणी के स्वाभाविक गुणों को अपनाना होगा।

जब संत, इंसानों के रूप में जन्म लेते हैं तो वो कुछ ही हफ्तों में अपने पिछले जन्मों को भूल जाते हैं और लगभग शुरुआत से अपना नया सफर तय करते हैं। मैंने यहां 'लगभग' इसलिए कहा क्योंकि उनके अवचेतन मन या अलौकिक शरीर में मौजूद संस्कारों, या पिछले जन्मों में हासिल की गईं अध्यात्मिक उपलब्धियां, प्रकृतियां या गुण उनके वर्तमान जन्म में कभी ना कभी प्रकट होते ही हैं। उनके लिए सबकुछ दोबारा सीखने की प्रक्रिया बड़ी आसान होती है, क्योंकि अपने पिछले जन्मों में उनकी आत्माएं पहले ही इसका अभ्यास कर चुकी होती हैं। हम इसे आध्यात्मिक डीएनए कह सकते हैं।

उनके भाग्य का चक्र अक्सर उन्हें ऐसी स्थिति में ले जाता है, जो उन्हें बार-बार उसी विषय की ओर खींचता है। इसीलिए राम को नहीं पता था कि वे भगवान राम हैं, जिन्हें लाखों वर्षों तक पूजा जाएगा।

बढ़ई का काम करने वाला वो नौजवान तो फर्नीचर बनाने में ही अपना भविष्य देखता रहा, जब तक उसे यह एहसास नहीं हो गया कि वो तो दरअसल आगे चलकर ईसा मसीह कहलाने वाला है। कमोबेश कुछ ऐसी ही कहानी राजकुमार सिद्धार्थ की भी है।

गुरुदेव भी अपने पिछले जन्मों में अध्यात्म की हैरतअंगेज ऊंचाइयों पर पहुंचे। इतिहास के महान भविष्यवक्ता भृगु ने हजारों साल पहले यह भविष्यवाणी कर दी थी कि गुरुदेव की जिंदगी कैसी होगी। और यह बिल्कुल वैसी ही थी जैसा कि ऋषि भृगु ने बताया था।

ऊपर बताए गए सभी मामलों में कोई इतिहास नहीं रचा जाना था, बल्कि महज़ उसका अभिनय किया जाना था।

एक छोटे-से शहर में परवरिश, सीमित पारिवारिक आय और ऐसे बहुत-से बंधन, असल में वो धागे थे, जिनसे गुरुदेव की ज़िंदगी का ताना-बाना बुना गया।

ये अचरज भरा है, लेकिन सच है। उनकी सीमाएं हीं उनके असीमित विकास की जड़ें बन गई थीं।

वो कद में छोटे थे, लेकिन उनके हौसले बेहद बुलंद थे।

वो पढ़ाई में कमजोर थे, लेकिन सर्वज्ञाता बने।

उन्हें फिल्म इंस्टीट्यूट ने अस्वीकार कर दिया था, लेकिन मेरी जानकारी में वो असल जिंदगी के अब तक के सबसे बेहतरीन अभिनेता बने।

उनकी मां के लिए वो हमेशा ही नदारद रहते थे, लेकिन फिर भी वो सर्वव्यापी बन गए।

उनकी कहानी अनोखी थी। मुझे लगता है कि उनकी इस कहानी का प्रकाशन काल्पनिक श्रेणी में किया जाना चाहिए क्योंकि यह सुनने में बड़ी अविश्वसनीय लगती है।

उनकी जिंदगी के आश्चर्य भरे पन्नों में आपका स्वागत है...

होशियारपुर के निकट हरिआना गांव में जन्मे और पढ़े लिखे गुरुदेव ने दिल्ली में नौकरी की, गुड़गांव में रहे और इस समय नजफगढ़ में अपनी पूरी महिमा के साथ विद्यमान हैं। हालांकि

जो बात मुझे थोड़ी निराली लगती है, वो यह कि उनमें आत्मविश्वास की कोई कमी ना थी, जबकि उनकी जिंदगी में कभी भी बहुत ज्यादा भौतिक संपत्ति नहीं रही।

क्या आप विश्वास करेंगे वो शख्स साइकिल पर सवार होकर स्टेशन आते-जाते थे। कभी-कभी वो साइकिल पर पीछे बैठकर अपने काम के दौरान लंच ब्रेक में सेवा करने पहुंच जाते थे। स्कूटर का मालिक बनना उनके लिए सबसे बड़ी लग्जरी थी, जिसे उन्होंने अपने करियर का आधा सफर तय करने के बाद खरीदा था, और वो भी एक सेकंड हैंड स्कूटर। उनकी संपत्ति का अंतिम पड़ाव उनकी प्रीमियर पद्मिनी कार थी!

भाग्य का चक्र बदलता रहा, लेकिन गुरुदेव का आत्म-भाव सदैव कायम रहा।

उनका घर ढाई सौ गज़ के प्लॉट पर था। इस छोटे से घर में उनका बड़ा-सा परिवार रहता था, और उनके कुछ शिष्य भी अस्थायी रूप से यहां रहते थे। रोज उनके स्थान पर सैकड़ों लोग आते थे और बड़ा गुरुवार यानी कि सेवा के लिए महीने में निर्धारित किए गए एक गुरुवार पर, उनके दर्शन के लिए 40 से 50 हजार लोग आते थे।

मुझे लगता है कि यदि फिल्मों को छोड़ दें, तो असल जिंदगी में इस तरह के आत्मविश्वास का मुकाबला तो बहुत-से राजा महाराजा भी नहीं कर सकते थे।

महागुरु के अस्तित्व में आने के बाद हम यह देख सकते थे कि उन्होंने जो शक्तियां हासिल कीं उससे उन्हें आंतरिक ताकत मिली, लेकिन बचपन में कौन-सी बात उन्हें इस ओर इशारा करती थी?

जरा इसका अनुमान लगाइए। मुझे लगता है कि यह उनकी मूल काबिलियत थी, जो भाग्य के साथ जुड़कर उनके अवचेतन मन को चेतना की ओर ले जाती थी।

तो ऐसे में अब गुरुदेव की बहनों के साथ कुछ गुफ्तगू की जाए। एक दिलचस्प कहानी सामने आने वाली है!

गुरुदेव की मां के कोई बेटे नहीं थे। ना ही उनकी ताईजी के। जल से इलाज करने वाले महागुरु का जन्म स्वयं इस जल से हुआ था। इसके लिए संतोकसर के महात्मा का सादर आभार, जिन्होंने यह कर दिखाया था।

गुरुदेव की बहनें : हमारे ताया जी के भी कोई लड़का नहीं था और हमारी मम्मी को भी कोई लड़का नहीं था। तो हमारे पिताजी बताते हैं कि हमारे दादा जी ने एक संत को बताया था कि उनके दोनों बहुओं को कोई बेटा नहीं है। तो संतोकसर गुरुद्वारा के महात्मा ने उन्हें उनकी दोनों बहुओं के लिए दो फल और पवित्र जल दिया। महात्मा ने कहा था कि इस लड़के (गुरुजी) का नाम संत प्रकाश रखना।

हालांकि संत प्रकाश नाम कभी रखा ही नहीं गया, क्योंकि इसे रखा जाना ही नहीं था। भृगु ने हजारों वर्ष पहले यह भविष्यवाणी कर दी थी कि शिव का यह अंश हरिआना नाम के गांव में जन्म लेगा और उनके नाम की शुरुआत 'राज' से होगी। इत्तेफाक से जिस दिन उनका जन्म हुआ, उस दिन बहुत ज़ोरों की बारिश हुई थी, इसलिए उनकी नानी ने वर्षा के देवता और स्वर्ग के शासक इंद्र के सम्मान में उनका नाम राजिंदर रखा था।

मैं आपसे यह पूछना चाहता हूं कि क्या उनका नाम राजिंदर इसलिए रखा गया क्योंकि ठीक उसी वक्त बारिश हुई थी? या इसलिए कि उनका नाम यही रखा जाना था? वैसे, भृगु ने तो हजारों साल पहले उनके नाम की भविष्यवाणी कर दी थी। या फिर जब उनका जन्म हुआ था, तो उसी वक्त इसलिए बारिश हुई ताकि उनका नाम राजिंदर रखा जा सके?

सरल सवालों के जवाबों में अक्सर गहरे राज छिपे होते हैं।

आगे जब उनकी दिव्यता सामने आई, तब प्रकृति के तत्वों के साथ उनका एक नायाब रिश्ता भी सामने आया। वो अपनी मर्जी से बारिश रोक सकते थे; समुद्र उनके चरण स्पर्श करता था, जो मैंने खुद देखा और जानवर कुछ इस तरह उन्हें प्रतिक्रिया देते थे, जो कल्पनाओं से भी अनोखा था।

इसलिए मेरे ज़ेहन में बड़े सटीक शब्द आ रहे हैं। मैं कहूंगा कि वो एक आदमी नहीं थे, जो संत बने। वो तो एक संत थे, जिन्होंने और बहुत-से लोगों को संत बनाने के लिए एक साधारण आदमी का किरदार निभाया। यह बिल्कुल एक संत निर्माण कारखाना स्थापित करने जैसा था।

आइए वापस चलते हैं उनकी बहनों के पास।

दोनों बहनें एक ही वक़्त पर बोलना शुरू कर देती हैं। जैसे कि स्टीरियोफोनिक टेक्नोलॉजी की अगुवाई कर रही हों। वे जिस घटना के बारे में बता रही हैं, वो उस वक्त की बात है, जब उनके घर की छत पर नन्हें गुरुदेव के ऊपर एक सांप विराजमान था। ज़रा इस अफरा तफरी पर गौर फरमाइए।

गुरुदेव की बहनें : तो जब ये पैदा हुए थे ना, तो मम्मी कहती है कि यह धूप में लेटाए हुए थे। तो एक फन वाला सांप उनके ऊपर खड़ा हो गया। हमारे घर में अब भी लकड़ी का वो झूला पड़ा हुआ है। तो जब उन्हें झूले में डाला हुआ था, तो झूले में ऊपर सांप था।

सवाल : आपकी मदर ने देखा था?

गुरुदेव की बहनें : हां उन्होंने देखा था। उन्होंने इस बारे में पंडित से पूछा। तो पंडित ने कहा कि यह भविष्य में बहुत होनहार बच्चा बनेगा।

सवाल : मैंने सुना था कि आपके बचपन में कुछ महात्मा लोग आए थे आपके पेरेंट्स के यहां...

गुरुदेव की बहनें : हां, वो आते रहते थे।

सवाल : उनमें से किसी ने कहा था कि जब गुरुदेव की उम्र 35 साल की होगी, तो वह बहुत मशहूर हो जाएंगे?

गुरुदेव की बहनें : उन्होंने कहा था कि वो शिव का रूप बन जाएगा। यह सुनकर मेरी मां और मेरे पिता दोनों रोने लगे थे।

सवाल : ये कब की बात है?

गुरुदेव की बहनें : यह बचपन में कहा था उन्होंने। उन्होंने यह भी कहा था कि वो साधु बन जाएगा। साधु भी नहीं बनेगा बल्कि वह शिवजी जैसा हो जाएगा।

कोई नहीं जानता कि वे महात्मा कौन थे, लेकिन मुझे याद है गुरुदेव ने मुझे यह कहानी बताई थी। उन्होंने इसका जिक्र माता जी से भी किया था।

इत्तेफाक की बात है कि बुद्ध के साथ, जीसस के साथ, कृष्ण के साथ और बहुत सारे महान संतों के साथ बिल्कुल ऐसा ही हुआ था। उनके विराट कल की भविष्यवाणी या तो उनके बचपन में या उनके जन्म के समय ही कर दी गई थी।

सुभाष सभरवाल हरिआना में गुरुदेव के सहपाठी थे और उन्होंने उनके साथ कई साल बिताए। जब गुरुदेव दिल्ली आ गए तो उनका एक दूसरे-से संपर्क टूट गया। इसके बाद सुभाष अपने बचपन के दोस्त से दोबारा तब मिले, जब उन्हें पता चला कि वो एक गुरु बन गए हैं और उन्होंने लोगों की मदद के लिए शक्तियां हासिल कर ली हैं। सुभाष जिस मदद की इच्छा लिए आए थे, उसे पाने के बाद वो स्थान के प्रशासनिक कार्यों में हाथ बंटाने लगे। गुरुदेव के साथ उनका संबंध एक दोस्त का था, लेकिन उन्होंने स्थान पर काफी ज्यादा वक्त बिताया।

सवाल : आप यह बताइए कि आपकी गुरुदेव के साथ क्या रिलेशनशिप थी?

सुभाष जी : हम लोग एक ही स्कूल में थे। हम सहपाठी थे। जैसे बच्चे आपस में एक स्कूल में होते हैं।

सवाल : तो गुरुदेव को शौक था पढ़ाई करने का?

सुभाष जी : बहुत ज्यादा शौक नहीं था। बहुत ज्यादा ब्रिलियंट स्टूडेंट भी नहीं थे। मैं भी बहुत ज्यादा ब्रिलिएंट स्टूडेंट नहीं था। आहिस्ता आहिस्ता करते-करते जब हमने प्राइमरी स्कूल पूरा किया और जब हम चौथी कक्षा में थे, तब भारत का पार्टिशन हो गया था। पार्टिशन के बाद क्या हुआ कि उनका इलाका भी मुस्लिम बाहुल्य था और मेरा इलाका भी। तो हमें कुछ मुश्किलें

हुईं। हमारे बहुत-से दोस्त मुस्लिम भी थे। हम लोग (मैं और गुरुजी) गरीब परिवारों से थे। हम लोग साथ मिलकर खेतों में जाते थे, लोगों के अमरुद चुराते थे और शरारतें करते थे।

सवाल : तो आप गुरुदेव के साथ मिलकर यह शरारतें करते थे?

सुभाष जी : हां मिलकर करते थे। और रास्ते में एक बगीचा आता था, उसमें बेर लगे रहते थे।

सवाल : यानी कि गुरुदेव बड़े शरारती थे?

सुभाष जी : उस उम्र में तकरीबन सभी बच्चे ऐसे ही होते हैं। गुरुजी भी वैसे ही थे। थोड़ी बहुत शरारतें तो करनी ही पड़ती थी।

सवाल : उनको सजा भी मिलती थी?

सुभाष जी : सजा तो सभी को मिलती थी।

उनके स्कूल के रास्ते में एक दरगाह थी, जिसमें कतार से बेर के पेड़ लगे हुए थे। बेर की चाहत में उन्होंने सारे धर्मों को अपना मान लिया था? क्या आप यकीन कर सकते हैं? बड़ा अनोखा है ना ये सब?

वो हिंदू परिवार में जन्मे, दो दरगाहों पर प्रार्थना की, फिर गुरु नानक देव और गोविंद सिंह जी के अध्यात्मिक सहयोगी बने और कई ऋषियों और देवी-देवताओं से संबंध बनाया। वो शख्स आध्यात्मिक एकजुटता की एक शानदार मिसाल थे, ये अलग बात है कि दर्शनशास्त्र में ऐसी कोई अवधारणा नहीं है।

सुभाष जी आगे बताते हैं...

सुभाष जी : रास्ते में एक फकीर की जगह हुआ करती थी। वो एक मुस्लिम थे और उनका नाम था सादक शाह बली। तो उनकी वो जो जगह थी?

सवाल : दरगाह?

सुभाष जी : हां, वहां दरगाह बनी थी। उसमें एक मुस्लिम रहता था, उसमें अक्सर हम जाया करते थे।

सवाल : वो क्यों?

सुभाष जी : वो हमारे स्कूल के रास्ते में थी। तो हम वहां जाया करते थे और वहां कई चीजें होती थीं। पहले तो पेड़ से सारे बेर तोड़ लिए और फकीर कहता था, "तुम बड़ा नुकसान करते हो। अब दरगाह पर आए हो तो कम से कम मत्था तो टेक लो।" तब ये पता लगा कि मेरी गैरहाजिरी में भी ये दरगाह पर जाया करते थे।

सवाल : टीचर्स के साथ उनका बर्ताव कैसा था?

सुभाष : देखो जी, उस वक्त के बच्चों को आज के बच्चों की तुलना में उतना नॉलेज नहीं था, क्योंकि बहुत सारी चीजें भी सामने नहीं थीं।

सवाल : नहीं, हम अक्सर अपने टीचर्स का मजाक उड़ाते हैं ना?

सुभाष जी : टीचर्स का मजाक तो सारे उड़ाते थे। वो तो हम भी उड़ाते थे और वो भी उड़ाते थे।

बच्चे तो बच्चे ही रहेंगे, यह कहना बड़ा आम है लेकिन गुरुदेव का मामला थोड़ा अलग था। वो भले ही आम बच्चों की तरह व्यवहार करते थे और उन्हीं की तरह रहते थे, लेकिन उनमें कुछ अनोखी बातों की झलक दिखाई दी थी। उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान की ललक थी और वो बाढ़ में भी घुटनों तक गहरे पानी से होकर दरगाह पर चिराग जलाने जाते थे। उन्हें साधुओं के साथ वक्त बिताने में बड़ा मजा आता था और उनसे कुछ सीखने की इच्छा भी रखते थे। हालांकि इत्तेफाक से वो जितने भी साधु-संतों से मिले, लगभग वो सभी आध्यात्मिक रूप से उनसे जूनियर थे।

उनके जीवनकाल के दौरान और उससे सदियों पहले भी उनके स्तर का कोई नहीं था।

अतीत, भविष्य की रणनीति बनाता है। इसलिए हम पढ़ाई-लिखाई में उनकी दिलचस्पी का ना होना समझ सकते हैं। उस वक्त वो शायद इस बारे में सजग रूप से नहीं जानते थे, लेकिन उन्हें तो भविष्य में कृषि मंत्रालय में काम करना था और आध्यात्मिक स्तर पर अपनी तीसरी आंख खोलकर सर्वज्ञाता बनना था।

गुरुदेव विश्व के कुछ सबसे शक्तिशाली मंत्रों का जाप करते थे और उन्हें भूत, वर्तमान और भविष्य का संपूर्ण ज्ञान था। आखिर उनके जैसा आदमी नीरस इतिहास क्यों पढ़ना चाहेगा? भला एक अलौकिक यात्री की भूगोल में क्या दिलचस्पी होगी?

राजी शर्मा को ध्यान मुद्रा में गुरुदेव के द्वारा रक्त की केमिस्ट्री दिखाई गई थी, तो ऐसे में गुरुदेव के दायरे में केमिस्ट्री और बायोलॉजी जैसे विषय कहां फिट होते?

हालांकि उनकी बहनें कुछ ऐतिहासिक शिकायतें जरूर करती हैं,

गुरुदेव की बहनें : जब वे स्कूल जाते थे तो पढ़ते नहीं थे। स्कूल वाले कहते थे कि यह वो लड़का है जो कभी नहीं पढ़ता। ऐसे में वो क्या करेगा? हमारे ताऊ जी के एक दामाद थे, तो वो टीचर थे उसी स्कूल में। वो बच्चों को अपने घर में पढ़ाते थे जैसे कोई एकेडमी होती है ना। तो फिर मम्मी ने बात की ताऊ जी की लड़की से। उन्होंने अपने पति से बात की, "मेरा भाई पढ़ता नहीं है।"

तो हमारे जीजा जी ने कहा, "उसे पढ़ने के लिए मेरे पास भेजो।" वो गुरु जी को सबसे ज्यादा पीटते थे, लेकिन गुरु जी को नहीं पढ़ना था, तो वो नहीं पढ़ते थे।

हेड मास्टर कहते थे, “मैंने इस लड़के को दाखिला नहीं देना है नहीं तो यूनिवर्सिटी टूट जाएगी।”

‘यूनिवर्सिटी टूट जाएगी!’ बहरहाल, अच्छी खबर यह है कि ऐसा कभी नहीं हुआ।

वैसे, जब भी कोई संदेह हो तो गणपति के पास चले जाएं। उन्होंने भी यही किया। अपनी परीक्षा देने से पहले उन्होंने अपने घर में रखी गणपति की मूर्ति को धमकी दी थी कि यदि वो पास ना हुए तो वो उस मूर्ति को तोड़ देंगे।

पास तो वो हुए। शायद गणपति ये नहीं चाहते थे कि पंजाब यूनिवर्सिटी टूट जाए। गग्गू एक पारिवारिक किस्सा सुनाते हैं।

गग्गू जी : वे पढ़ाई में कमजोर थे। एक बार फेल भी हो गए थे। मम्मी हालांकि पढ़ाई में अच्छी थीं। वो उन्हें समझाती थीं जैसे कि भाई-बहन करते हैं। मेरी मां एक कोर्स के लिए एक एग्जाम में बैठी थी, जो भविष्य में उनकी मदद कर सकता था। तो उन्होंने (गुरुदेव ने) कहा, "भगवान यदि यह फेल हो गई, तो मैं आपको लड्डू चढ़ाऊंगा और यदि तुमने मेरी बात नहीं मानी तो मैं तुम्हारी मूर्ति तोड़ दूंगा।"

सवाल : गुरुदेव ने ऐसा कहा? (हंसते हुए)

गग्गू जी : मुझे लगता है यह सुनकर हमारी नानी ने ये कहकर गुरुदेव की पिटाई की थी कि तू घर का बुरा चाहता है (हंसते हुए)। पर मुझे याद नहीं कि मेरी मां पास हुई थीं या फेल।

वैसे मेरी सहानुभूति तो महान देवता गणपति के साथ है। वे जरूर ये सोच रहे होंगे कि आखिर ये किस तरह का आदमी है? कभी ये मेरी पूजा करता है और कभी मुझे लड्डू चढ़ाने की कोशिश करता है और कभी वो अपनी बहन को फेल कराने के लिए मुझसे गुजारिश करता है और बाकी समय मुझे धमकी देता है कि यदि मैंने उसे पास नहीं कराया तो वो मेरी मूर्ति तोड़ देगा।

गणपति के साथ उनका गठबंधन परीक्षा में पास-फेल की जद्दोजहद से शुरू हुआ था और आगे चलकर यह एक ऐसा गठबंधन बन गया, जिससे उनकी हथेली पर गणपति की शक्ति अंकित हो गई और ये शक्ति उनमें समा गई। आगे जाकर महागुरु ने इस शक्ति का प्रयोग किया और अपने शिष्यों को भी प्रदान की।

आइए कुछ राहत के लिए बहनों के पास वापस लौटते हैं,

गुरुदेव की बहनें : गुरुदेव का ऐसा था, जैसे कोई अलमारी के अंदर कोई चीज रखी हो, जिसे वो चाहते हों, लेकिन अलमारी पर ताला लगा हो। हालांकि जो चीज वो चाहते थे, वो बंद अलमारी से ही गायब हो जाती थी। जैसे कि अलमारी में पिन्नियां रखी हुई और किसी ने कह दिया कि वो खाना चाहता है...

सवाल : तो क्या आपने अपनी आंखों से देखा था?

गुरुदेव की बहनें : हां कई बार। ये चीजें हमारे सामने हुईं।

सवाल : यह किस उम्र की बात है, मतलब जब वो दसवीं में थे?

गुरुदेव की बहनें : हां, दसवीं की बात रही होगी। वो हमसे कहते थे कि उनकी पीठ खुजाओ और वो हमें पिन्नियां देंगे। हमें नहीं पता होता था कि अलमारी में पिन्नियां रखी रहती थीं। हम लालच में आकर उनकी शर्तें मान लेते थे। और वो अलमारी का ताला खोले बिना हमें वो पिन्नियां देते थे।

सवाल : आपकी मदर ने कभी पकड़ा नहीं उनको?

गुरुदेव की बहनें : पकड़ेंगे कैसे? सबूत क्या है? अलमारी में तो हमेशा ताला लगा रहता था, तो वह किस पर इल्जाम लगा सकती थीं? चाबी तो उनके पास रहती थी।

दरअसल उनकी बहनें बता रही थीं कि कैसे गुरुदेव उन्हें अपनी पीठ खुजाने के बदले में उनको पिन्नियों की रिश्वत दिया करते थे। गुरुदेव उस बंद अलमारी से पिन्नियां गायब कर देते थे, जिसकी चाबी हमेशा उनकी मां के पास होती थी।

ये घटना भले ही आपको भाई-बहन की कोई शरारत लगे, लेकिन यदि आप सतह के नीचे झांकेंगे, तो ऐसा बिल्कुल नहीं पाएंगे। असल में यह चीजों को साकार और निराकार करने की गुरुदेव की काबिलियत का परिचय था। हालांकि उन्हें अपनी इस काबिलियत का कोई इल्म नहीं था।

उस वक्त तक तो उन्हें ये एहसास ही नहीं था कि वे कौन है और क्या बनेंगे? सभी ने उन्हें एक सामान्य बच्चे की तरह देखा, जो एक आम जिंदगी जी रहा था... ऐसी जिंदगी जो कोई भी दूसरा बच्चा जीता है। और उन्होंने भी वही जिंदगी जी।

बचपन में उनके साथ एक बड़ा अजब वाक़या हुआ था, जब वो काला जादू के शिकार हो गए थे। उस घटना से कई बातें साफ हो गईं,

पहली तो यह कि वो अपने पिछले जन्मों में जो भी रहे हों, लेकिन वो काले जादू से सुरक्षित नहीं थे। इससे यह सामने आया कि उनकी जो शक्तियां थीं, वह भविष्य के लिए थीं। उस वक्त उनके पास जो भी था, वो गुप्त था, जिसका प्रदर्शित होना अभी बाकी था।

दूसरी बात यह कि इस अव्यक्त शक्ति ने ही उन्हें इस घातक प्रहार से बचाया था। हालांकि उन्हें कुछ सालों तक तकलीफों से गुजरना पड़ा, लेकिन उनके भविष्य ने इसका हल ढूंढ लिया था।

माताजी उस घटना के बारे में बताती हैं,

सवाल : एक और सवाल मैं आपसे पूछना चाहूंगा कि ये क्या चाहते थे? ये आध्यात्मिक रूप से क्या बनना चाहते थे? उनकी आध्यात्मिक आकांक्षाएं क्या थीं? वो ये सब क्यों करते थे?

माताजी : वो जानना चाहते थे कि भक्ति क्या चीज है? भक्ति क्या होती है? इसकी शुरुआत कैसे हुई? जहां तक मुझे पता है कि बचपन में इनको किसी ने कुछ खिला दिया था। तब ये पांचवीं या छठवीं में पढ़ते थे। तो इनको कुछ खिला दिया था, तो ये बीमार बहुत बीमार हो गए थे। आठवीं-नौवीं तक वो बहुत बीमार रहे थे। मेरे ससुर ने इनका बहुत इलाज कराया, देशी विदेशी इलाज कराया लेकिन ये ठीक नहीं हुए। फिर मेरी सास कहने लगीं कि इनको बाबा बालक नाथ मंदिर ले जाओ। मेरे ससुर जी ने कहा, “वहां ठीक नहीं होंगे और वहां उन्हें कैसे ले जाएंगे। वो तो चल भी नहीं सकते थे, वो इतने बीमार थे।” वो कहतीं, “नहीं, मैं लेकर जाऊंगी।” मां उन्हें वहां लेकर गईं। कोई जगह थी, मैं तो जानती नहीं हूं। वहां जाकर यह एकदम ठीक तो नहीं हुए, किसी ने उनको देखा और उन्हें जल पिलाया जिससे उनको उल्टी हो गई। उसमें कुछ कच्ची लस्सी और कुछ कच्चे मसान (श्मशान की राख) निकले।

सवाल : मसान मतलब?

माताजी : तांत्रिक होते हैं ना, जब कोई मरता है तो वो जानते हैं, कौन-सी हड्डी कब खिलाई जाती है। और राख भी...

सवाल : मृत शरीर की राख...?

माताजी : हां राख। मिलाकर जो खिलाते हैं ना, वो चीजें निकलीं उनके पेट से। उसके बाद फिर वो ठीक हुए। उन्होंने देखा कि ये क्या चीज है। इतनी देर यह कहां रही मेरे अंदर? यह कैसे रहीं। उसको परखने के लिए फिर ये भक्ति लाइन में आए। यहां से उन्होंने शुरुआत की, यह देखने के लिए कि मेरे अंदर ये चीज इतने लंबे समय तक कैसे रहीं।

ये मुमकिन है कि इस घटना ने उन्हें अपनी राह बदलने के लिए प्रेरित किया हो।

इससे भाग्य ने उन्हें आध्यात्मिक कलाओं के बारे में ज्यादा जानने के लिए बहुत उत्सुक बना दिया। उनकी यही प्यास उन्हें उनकी मंजिल की तरफ ले गई। उनके परिवार और दोस्तों ने ये शुरुआती संकेत देखे थे, लेकिन उन्हें ये समझ नहीं थी कि उसका क्या मतलब निकाला जाए।

शुरुआती दौर में गुरुदेव की आध्यात्मिक सीख किसी निश्चित दिशा में नहीं थी। उनकी स्थिरता तो उनके अतीत और उनके भविष्य में थी। हालांकि वो वक्त ऐसा था जब उनके भविष्य के लिए वर्तमान की जमीन तैयार हो रही थी। आइए गग्गू जी से जानते हैं।

गग्गू जी : बचपन से ही गुरु जी को साधुओं से मिलना, उन्हें खाना देना बहुत अच्छा लगता था। वो घर से भाग जाते थे और साधुओं के साथ वक्त बिताते थे। भाग जाते थे मतलब यह नहीं कि दिन और रात गायब रहते थे। हमारी नानी दिन भर घर में उन्हें ढूंढती रहती थी वो जिस नाम से भी उन्हें पुकारती थी। उन्हें बचपन से ही किसी भी साधु की सेवा करना बहुत अच्छा लगता था।

सवाल : एक मंदिर था?

गग्गू जी : हां वो मंदिर में आते थे, घर पर नहीं। घर पर तो कोई भी उन्हें नहीं बैठाता था।

सवाल : गुरुदेव अक्सर उस मंदिर में जाते थे?

गग्गू जी : हां वो उस मंदिर में जाते थे। साधु उस मंदिर में या किसी और मंदिर में आते थे। उनके अंदर एक साधुओं से कुछ पूछने की इच्छा थी। वो किसी आभास जैसा था। वो उनसे विचार विमर्श करते और चर्चा करते थे। इससे हमारी नानी गुस्से में आ जाती थीं।

हमारे गांव हरिआना में, पंजाब में था, चार पांच पीर बाबा की जगह थी। लोगों उन्हें मानते भी थे और वहां जाते भी थे। किसी ने उनसे कहा, "बेटा तू गुरुवार को यह किया कर।" तो वो हर गुरुवार को मज़ार पर दिया जलाते थे। वो इसे लेकर इतना पक्का इरादा रखते थे कि कई बार बाढ़ आ जाती थी और लैंडस्लाइड होती थी और घरवालों की डांट भी पड़ती थी, तब भी वो वहाँ जाते थे। तो उस समय दिया नहीं मिलता था, फिर भी वहां जाते थे और किसी भी तरह का दिया जला देते, चाहे वो मिट्टी का या छोटा सा कुछ भी, या फिर माचिस। उस समय पॉलिथीन बैग भी नहीं थे, तो उसको जैसे-तैसे बांधकर ले जाते थे पर यह था कि जो भी दिन होता था, वो उसी दिन उसे करते थे।

देश के विभाजन से पहले उनके गांव में इस्लाम का काफी प्रभाव था। उस समय उनके ज्यादातर दोस्त मुस्लिम थे, जो बाद में पाकिस्तान चले गए। इससे उनकी धार्मिक मान्यताओं में एक लचीलापन था। वो शिवालय जाते थे और अपने पास की दरगाह में जाकर चिराग भी जलाते थे।

आगे चलकर वो सभी धर्मों के लोगों की सेवा करने लगे और उनके भक्त अलग-अलग पृष्ठभूमि से होते थे। उन्होंने कभी लोगों का धर्म परिवर्तन कराने का प्रयास नहीं किया।

वो सभी धर्मों को अपना मानते थे। उनका कई संतों से नाता था और वे सभी की महान सीख की मिसाल देते थे।

सेवा में सभी धर्मों को शामिल करने की यह परंपरा आज भी उनके सभी स्थानों पर जारी है। उनका उदाहरण हम सभी के लिए एक सीखने लायक अनुभव है। तो हम उम्मीद करते हैं कि

आने वाले वक्त में लोग सभी धर्मों को एक वृक्ष की विभिन्न शाखाओं **जैसा समझेंगे**, ना कि एक दूसरे से अलग!

गुरुदेव की जिंदगी को जिन दो लोगों ने प्रभावित किया और जो उनके शुरुआती गुरु थे, वो थे बनारस के सीताराम जी और उनके शिष्य दसुआ के सीताराम जी। आगे जाकर गुरुदेव, बुड्ढे बाबा के नेतृत्व में अपनी अंतिम राह पर चल पड़े।

दसुआ के सीताराम जी ने गुरुदेव की आध्यात्मिक शिक्षा को एक आकार दिया। उन्होंने गुरुदेव का मार्गदर्शन किया, जिसमें गुरुदेव ने कई सिद्धियाँ प्राप्त कीं। यह कुछ खास बीमारियों का इलाज करने के लिए थीं, जिनमें सांप के काटने का इलाज और लोगों को बरकत दिलाने में मदद करना, जैसे कि व्यर्थ खर्च को कम करना शामिल था। हालांकि इन सिद्धियों का ना उन्हें कोई नुकसान था, ना दूसरों को, लेकिन वो उन शक्तियों से बहुत कम प्रभावशाली थीं, जो उन्हें आगे मिलने वाली थीं।

इन सिद्धियों ने उन्हें अनुशासन और ध्यान केंद्रित करने का अभ्यास कराया और उन्हें अटल और निडर रहना सिखाया। भविष्य में उच्च आध्यात्मिक प्राप्तियों के लिए वे इन सभी सिद्धियों का त्याग करने वाले थे।

उनके साथ काम करने वाले आर. सी. मल्होत्रा तो गुरुदेव के महागुरु बनने से पहले ही उनके शिष्य बन गए। उस वक्त मल्होत्रा जी उनके एक आध्यात्मिक सहयोगी थे, जिन्होंने अपने दोस्त से कुछ खास चीजें सीखीं और इसे आजमाने के लिए बेहद उत्साहित थे। लेकिन बाद में स्थिति बदली। इन दोनों में से एक महागुरु बन गए और दूसरे उनके परम शिष्य।

यहां हम मल्होत्रा जी की दुर्लभ रिकॉर्डिंग्स में से एक पेश कर रहे हैं...

सवाल : सीताराम जी वही व्यक्ति थे, जो शीतला देवी मंदिर में रहते थे?

मल्होत्रा जी : हां, हरिआना में।

सवाल : और उनके गुरु दसुआ के सीताराम जी थे?

मल्होत्रा जी : नहीं ये दसुआ के थे जो वहां कभी नहीं रहते थे। वो आते थे और वहां रुकते थे।

सवाल : और उनके गुरु कहां के थे, पोंगा? नहीं?

मल्होत्रा जी : वो हरिद्वार, ऋषिकेश के थे। उन्होंने एक महात्मा से दूसरे महात्मा के साथ वक्त बिताते हुए 8 साल गुजारे और फिर इस लाइन में आए।

सवाल : और वो सह शरीर गए?

मल्होत्रा जी : हां वो सह शरीर गए।

सीताराम जी सीनियर इस दुनिया से सह शरीर ही चले गए थे जैसा कि जीसस, कबीर और बहुत-से सिद्ध संतों के साथ हुआ था। मुझे बताया गया था कि सीताराम जी जूनियर को सीताराम जी सीनियर ने अपने जाने के बाद पूर्णतः प्रशिक्षित किया था।

सीताराम जी सीनियर और जूनियर, दोनों ने ही गुरुदेव का मार्गदर्शन शायद इसलिए किया था, क्योंकि वो उनका भविष्य देख सकते थे, उनकी पिछली उपलब्धियों को देख सकते थे और वर्तमान में भी उनकी प्रकृति को समझ सकते थे। सेवाभाव तो गुरुदेव के डीएनए में था। इसके अलावा, वो शायद ये जानते थे कि वो इस सफर का और उनकी आध्यात्मिक तैयारियों में उनका हिस्सा हैं।

अपनी पढ़ाई-लिखाई के प्रति गुरुदेव की नजरअंदाजी और आध्यात्मिकता के प्रति उनकी गंभीरता की वजह से गुरुदेव के माता-पिता चाहते थे कि वो अपने करियर पर ध्यान दें। इसलिए उन्होंने उन्हें दिल्ली में उनके तायाजी के यहां भेज दिया, ताकि वो वहां आगे की पढ़ाई करके एक नौकरी ढूंढ सकें।

तो गुरुदेव आगे की पढ़ाई के लिए दिल्ली रवाना हो गए।

वो उनके अगले चरणों का एक नया दौर था। शुरुआत में उन्होंने अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए बहुत-से छोटे-मोटे काम किए। अपने तायाजी का बोझ कम करने के लिए वो घर के काम में हाथ बंटाते, गेहूं की बोरियां मिल पर ले जाते और वापस लाते। वो हमेशा छोटे-छोटे काम करने में सहज रहते थे।

गग्गू जी के पास अपने मामाजी यानी गुरुदेव के बारे में कुछ खास खबर है।

गग्गू जी : तो दसवीं पास करने के बाद इन्होंने कोई कोर्स कर रखा था। इनके ताया जी थे। वो ले आए यह बोलकर कि मैं इनको ठीक कर दूंगा, इसको नौकरी पर लगा दूंगा। मेरे ताया जी उस वक्त एवरेडी कंपनी में काम करते थे, जो सेल बनाती हैं। इन्होंने तो पेन वगैरह भी बेचे। तो आप अगर यह सोचें, तो हर तरह के काम करने पड़ते हैं ना।

सवाल : तो इन्होंने पेन वगैरह कब बेचे?

गग्गू जी : दिल्ली में।

सवाल : जब वो यहां रहने के लिए?

गग्गू जी : हां जब ये आए यहां रहने के लिए। दिल्ली में इनके ताया जी रहते थे।

सवाल : तो दसवीं पास करने के बाद वो यहां आ गए?

गग्गू जी : दसवीं पास करके कुछ समय के बाद वो यहां आ गए। यहां दो चार जान-पहचान वाले रहते हैं, तो आदमी को एक सहारा हो जाता है। वो आ गए और फिर शॉर्टहैंड टाइपिंग भी सीखी। दिल्ली में उन्होंने पहले तो पेन बेचे, फिर टिकटें भी बेचीं। तो यह 1961 की बात होगी, जब वो पूसा इंस्टिट्यूट गए थे और वो उस समय शाहदरा, राम नगर में ही रहते थे।

पूसा इंस्टिट्यूट, जो उस समय कृषि मंत्रालय का हिस्सा था, में उन्हें नौकरी कैसे मिली?
वैसे बहुत-से लोग राजनीतिक प्रभाव का इस्तेमाल करके सरकारी विभागों में जगह बनाते हैं, लेकिन गुरुदेव के मामले में तो एक गाय ने ऐसा किया।

क्या मैंने एक गाय कहा?!

हां, एक गाय!

एक सुबह जब गुरुदेव पड़ोस में टहल रहे थे, तो उन्होंने देखा कि एक बुजुर्ग महिला गाय का दूध निकालने की असफल कोशिश कर रही है। उन्होंने मदद की पेशकश की। इसके बाद महागुरु ने गाय को कुछ बार धीरे से थपथपाया और ये लीजिए... गाय दूध देने लगी! उस महिला ने फिर ऐसे ही गुरुदेव की जिंदगी के बारे में जानना चाहा। जब उस महिला को पता चला कि गुरुदेव कुछ खास नहीं कर रहे हैं, तो उन्होंने गुरुदेव से कहा कि वो मार्गदर्शन के लिए उनके पति से बात करें।

महिला के पति पूसा इंस्टिट्यूट के प्रिंसिपल निकले और उनकी सलाह पर ही गुरुदेव ने भारत सरकार द्वारा स्थापित की गई विकास एजेंसी भारत सेवक समाज से 2 साल के टेक्निकल कोर्स में दाखिला लिया।

कोर्स पूरा करने के बाद साल 1958 में गुरुदेव कृषि मंत्रालय के अंतर्गत ऑल इंडिया सॉइल एंड लैंड यूज़ सर्वे में सॉइल सर्वेयर के रूप में भर्ती हो गए। वो उस वक्त 20 साल के थे, जब उन्हें डेढ़ सौ रुपए की पहली तनख्वाह मिली थी।

लगभग इसी समय गुरुदेव द्वारका नाथ जी के साथ उनके कमरे में रहने लगे, जो की नागपाल जी के मित्र थे।

दिलचस्प बात यह है कि नागपाल जी को नाम की एक गलती की वजह से गुरुदेव के विभाग में नौकरी मिली थी। हुआ यूं कि एक राजनेता ने अपने बेटे को नौकरी दिलाने के लिए अपने प्रभाव का इस्तेमाल किया। इतेफाक से उस राजनेता के बेटे का नाम भी के.एल. नागपाल था। इसी नौकरी के लिए नागपाल जी भी कोशिश कर रहे थे। क्योंकि दोनों के उपनाम एक जैसे थे, तो इससे थोड़ा असमंजस पैदा हो गया और इस वजह से गलत के. एल. नागपाल को यह नौकरी मिल गई। वैसे, यही गलत इंसान गुरुदेव के लिए बिल्कुल सही साबित हुआ।

नागपाल जी न सिर्फ अपने परम गुरु के लिए बहुत काम के थे, बल्कि हम सभी के लिए भी बड़े अनमोल थे। जब हम गुरुदेव के साथ कैंप्स पर जाते थे, तो वो गुरुदेव का काम संभालते थे, ताकि गुरुदेव हमारे साथ वक्त बिता सकें।

आइए गुरुदेव के मकान मालिक, उनके दोस्त और श्रद्धालु द्वारकानाथ जी से सुनते हैं,

सवाल : आपकी गुरुदेव से मुलाकात कब और कैसे हुई?

द्वारकानाथ जी : नागपाल जी मेरे बचपन के दोस्त हैं। हम लोग आगरा में रहते थे, जहां हम साथ पढ़ते थे। इसके बाद हम दिल्ली आ गए। हम दोनों को नौकरी मिल गई, सरकारी नौकरी थी। बाद में गुरुदेव को भी वही नौकरी मिली। एक दिन नागपाल जी ने मुझे बताया कि होशियारपुर के हरिआना से उनका एक दोस्त है और वो हमारे साथ उस कमरे में रहना चाहता है, जिसमें हम रहते थे। तो जब मैंने पहली बार गुरुदेव से बातचीत शुरू की तो मैं गुरुदेव से बहुत इम्प्रेस हो गया। वो तो हमसे बहुत ज्यादा बुद्धिमान थे और बात करने में भी बहुत अच्छे थे। तो मैंने कहा, ओके और हम तीनों इकट्ठे पहाड़गंज में उस कमरे में रहने लगे। यह कमरा फर्स्ट फ्लोर पर था 10 बाय 10 का। ऊपर टीन शेड था और आगे बरामदा था। वो हर साल 6 महीने अपने टूर पर रहते थे और 6 महीने यहां रहते थे। वो अपने साथ अपना पलंग ले आते थे बस खोला और लगा लिया। वो इतने खुश मिजाज थे, और उनकी खूबी ये थी कि वो लोगों को हंसाते बहुत थे। जब भी वो बात करते थे तो हंसी आ जाती थी। इतनी हंसी आती थी कि लोटपोट हो जाते थे। मेरे और दोस्त जो संडे को आते थे और मेरे साथ बैठते थे, वो इतने इम्प्रेस हो जाते थे कि मुझसे कहते थे कि आप बुलाओ उनको और वो कुछ कहानियां सुनाएं। वो बहुत-सी चीजें सुनाते थे, जिससे आदमी बहुत एंजॉय करता था। गुरुदेव को पिक्चर देखने का बहुत शौक था, हमसे भी बहुत ज्यादा। तो वह देखते थे 9 बज गए हैं और वो शीला सिनेमा में फिल्म देखने जाते थे।

वैसे, मैं तो ये सोच रहा हूं कि क्या गुरुदेव को भूमिकाएं निभाने में इसलिए महारत हासिल हो गई, क्योंकि उन्हें फिल्मों का शौक था? मैं ये इसलिए कह रहा हूं क्योंकि फ़िल्में और टीवी शोज़ मेरी भी कमजोरी हैं।

देखा जाए तो 16 से ज्यादा कलाएं होती हैं, जिनमें लोग माहिर हो सकते हैं और जिनके बारे में जानते हैं। महागुरु को इनमें से ज्यादा कलाओं में निपुण होना होता है। इतिहास के एक पूजनीय देव श्री कृष्ण 16 कलाओं में निपुण थे। राम 12 या 14 कलाओं में निपुण थे और गुरु नानक देव 10 या 12 कलाओं में माहिर होंगे, मगर मैं यकीन से नहीं कह सकता। इनमें से एक कला है आपकी हास्य कला.... और गुरुदेव के पास विटामिन एच यानी हंसी की कोई कमी नहीं थी।

सवाल : तो जब आप साथ रहते थे तो आपका दिन कैसा होता था?

द्वारकानाथ जी : संडे को हम सुबह उठे, नाश्ता पानी किया। घूमने का उन्हें बहुत शौक था। मेरे पास इतनी तस्वीरें हैं गुरुदेव की घूमने की। वो कहते थे, "चलो आज कुतुब मीनार चलते हैं, आज लाल किला चलते हैं, फलानी जगह चलते हैं।" पिक्चर तो अगर रोज देखने को मिले, तो देखते थे। जैसे ही पिक्चर हॉल में हम जाते थे, तो वो नागा से कहते थे कि तू उधर बैठ, मैं इधर बैठूंगा और वो मुझे बीच में बिठा लेते थे। क्योंकि जब पिक्चर चल रही होती, तो मैं सो जाता था। गुरुदेव नागा से कहते थे कि यदि मैं सोता दिखूं तो मुझे एक मारे। पिक्चर देखकर मुझे नींद आ जाती थी, तो मैं पिक्चर देखने में ज्यादा दिलचस्पी नहीं रखता था। तब भी वो अपने साथ जबर्दस्ती ले जाते थे कि चल, तू भी साथ चल।

सवाल : उनकी रूटीन क्या थी?

द्वारकानाथ जी : नॉवेल पढ़ने का बहुत शौक था। नॉवेल बहुत पढ़ते थे। जहां ऑफिस था, वहां पास में ही एक लाइब्रेरी थी। वो रोज वहां जाकर कुछ नॉवेल ले आते थे। नागपाल को भी पढ़ने का शौक था, लेकिन मुझे नहीं था। जब वो पढ़ने बैठते, तो मैं उनसे पूछता था, तुम सारा समय क्यों पढ़ते रहते हो। मैं कहता था कुछ और बात करें। उन्होंने जितने लोगों के साथ काम किया वो टाइम देखते थे कि वो कब आएंगे क्योंकि वो हंसाते बहुत थे। मेरे बड़े भाई, जो अजमेरी गेट के पास रहते थे, वो मुझे ऑफिस में फोन करके पूछते थे कि कब आएगा और पूछते थे कि रजिंदर (गुरुदेव) भी साथ आएगा क्या? जब मैं हां कहता, तो वो कहते कि मैं भी वहीं आऊंगा खाना और वही खाना खाऊंगा, रात को वहीं रुकेंगे और गपशप मारेंगे। जो उनके संपर्क में आ गया, वो उनका हो गया। ये खासियत थी उनकी।

हालांकि वो विटामिन एम यानी मनी के मामले में उतने बिंदास नहीं थे। गुरु में मौजूद विष्णु रूप ने महसूस किया कि इसके लिए उन्हें पसीना नहीं बहाना पड़ेगा। उन्होंने थोड़ा बहुत कमाया, जिसमें से उन्होंने बहुत कुछ बांट दिया और फिर भी किसी तरह दो वक्त का गुजारा किया।

खास बात ये थी कि जब भी वो कुछ खरीदने के लिए किसी को पैसे देते थे तो बाकी पैसे कभी वापस नहीं लेते थे। यकीन मानिए, आप जितना सोच रहे हैं ये काम उससे कहीं ज्यादा मुश्किल है! मैं पिछले कई सालों से यह आदत अपनाने की कोशिश कर रहा हूं लेकिन अब तक नाकाम रहा हूं।

गुरुदेव ने एक विचित्र सी काबिलियत हासिल की थी, जिसे वे आपातकालीन मामलों में इस्तेमाल करते थे। वो अपनी जेब में हाथ डालते और नोटों की गड्डी निकाल लेते थे। मुझे नहीं लगता कि उन्हें ऐसा करना अच्छा लगता था, लेकिन कुछ स्थितियों में उन्होंने ऐसा किया था।

यकीनन, उन्होंने इसे अपने फायदे के लिए कभी नहीं किया, बल्कि सिर्फ सेवा से जुड़े मसलों के लिए इसका इस्तेमाल किया। जहां तक मुझे पता है, उन्होंने अपने आध्यात्मिक जीवन में काफी आगे जाकर ये योग्यता हासिल की थी। शायद पैसों को लेकर उनके बेपरवाह रुख के कारण ही उन्होंने देर से ऐसा किया था।

यह मेरा एक बार से ज्यादा का अनुभव है कि जब गुरुदेव के निर्देश पर मुझे गुड़गांव की यात्रा करनी होती थी, तो अचानक कहीं से पैसे आ जाते थे। वो कहते थे कि मैं हवाई जहाज से आऊँ और वो दिन बड़े तंग थे। तो मुझे लगता है उन्होंने वहां मेरी मदद की। मुझे अपने गद्दे के नीचे से, अलमारी के पीछे से और कोट की जेब से टिकट के लिए पैसे मिले... हो सकता है मैं इसे वहां रख के भूल गया था, लेकिन मुझे वो पैसे तभी मिले, जब मुझे हवाई यात्रा करके गुड़गांव पहुंचने की जरूरत पड़ी। मैं नहीं जानता कि वो नोट कहां से आए, लेकिन इसके पीछे की भावना जरूर नोट करने लायक है।

पैसों को लेकर गुरुदेव के प्रबंधन या यूं कहिए कि उस प्रबंधन की कमी को लेकर द्वारकानाथ जी कुछ यूं समझाते हैं,

द्वारकानाथ जी : जितना समय गुरुदेव हमारे साथ रहे, हमने खूब एंजॉय किया। दूसरा पैसे का उनको बिल्कुल लगाव नहीं था। तो हमारा मेस था तीनों के 30-30 रुपए मिलाकर 90 रुपए जमा होते थे और उसी में से हमारा खाना, चाय-पानी, मनोरंजन और जहां भी जाना होता था उसमें ही शामिल होता था। और नागपाल कैशियर था। मैं उन्हें मैं अपने 30 रुपए देता था और गुरुदेव से कहता था कि आप भी दो। तो कहते थे कि मेरे पास तो है नहीं! वो नागपाल से कहते थे, "नागे तू मेरा शेयर डाल दे, मैं तुझे बाद में दे दूंगा।" यह सुनकर मैं नागपाल से कहता था कि वो जब अपनी तनख्वाह लेते हैं, तभी उनसे पैसे ले लिया करो। पूरा महीना चलाना है तो कैसे चलेगा? वो हंसते थे, हमें भी हंसाते और कहते थे, "हां नागे, तू ले लिया कर। मेरी सैलरी के दिन ही ले लिया कर।" उन्होंने कभी पैसा अपने पास नहीं रखा। जैसे ही आता था, वो उसे बांट देते थे।

मुझे नहीं पता कि ये चर्चा कितनी गुरुदेव के बारे में थी, और कितनी महंगाई के बारे में।

तो आइए अब उनकी आर्थिक नीति से ध्यान हटाकर उन मुश्किलों की तरफ चलते हैं, जो उनके रास्ते में आईं।

तकदीर ने उन्हें राज़ को राज़ रखने की कला सिखाई थी। और वो राज़ तभी खोलते थे जब उसकी जरूरत होती या जब वो चाहते थे। आखिर, आने वाले समय में उन्हें ऐसे लाखों लोगों का राज़दार बनना था, जो मदद की आस में उनके पास आने वाले थे। दिलचस्प बात यह है कि अपनी दिव्य दृष्टि या तीसरे नेत्र की मेहरबानी से वो कुछ ऐसे राज़ भी जानते थे, जो लोग उन्हें कभी नहीं बताते थे। सबकुछ जानते हुए भी इतने सारे राज़ दिल में ही छुपाए रखना यकीनन आसान नहीं था।

उनके साथ बिताए गए लगभग एक दशक में मैंने उन्हें कभी किसी को प्रभावित करने के लिए अपनी शक्तियों का दिखावा करते नहीं देखा। कभी-कभी गुरु रूप में वो ऐसी टिप्पणियां करते, जो हम सभी के लिए हैरान कर देने वाली होती थीं। लेकिन उनके लिए तो वो सचबयानी थी।

जब ज्वाला जी मंदिर में किसी ने उनसे पूछा था कि वो देवी के आगे सिर क्यों नहीं झुका रहे हैं तो गुरुदेव का जवाब था, "अपनी ही शक्ति के पांव कौन छूता है?"

जब वो मुझे सबसे प्रभावशाली विष्णु मंदिरों में से एक बद्रीनाथ मंदिर ले गए, तो उन्होंने यह कहकर मुझे चौंका दिया था कि “जाओ और अपने भाई को गले लगा लो।”

उन्होंने मुझसे एक बार ये भी कहा था कि समुद्र महाशक्ति का प्रतीक - देवी महाकाली का गढ़ है और वो मेरी दादी हैं।

इस तरह की बातें आसानी से हज़म नहीं की जा सकती थीं, लेकिन उन पर मेरे अटूट विश्वास की वजह से मैं उन्हें हमेशा सही मानता था।

जब वो अपनी अलौकिक काबिलियत को छिपाने की ज्यादा कोशिश करते, तो अक्सर पकड़े जाते थे!

उनके शुरुआती वर्षों में उनके कमरे में साथ रहने वाले दोस्त अक्सर उन्हें अलसुबह कंबल ओढ़े मंत्रों का उच्चारण करते पकड़ लेते थे। कोई उन्हें एक ऐसे बंद कमरे में बैठा देखता, जिसका ताला खोला ही नहीं गया था। एक बार वो बड़ा गुरुवार के लिए सब्जियां खरीदने गए और अपना बटुआ भूल गए। उन्होंने बस अपनी जेब में हाथ डाला और जेब से सिर्फ इतने रुपए निकले जितने उन्हें चुकाने थे। वैसे, वो एक ही वक्त पर दो जगहों पर भी रह सकते थे!

मुझे लगता है कि भाग्य चाहता था कि लोग उनकी कहानी को जानें और उनकी जिंदगी दूसरों की राह में रोशनी बने।

गुरुदेव के शुरुआती वर्षों के कुछ और दिलचस्प किस्से सुनने के लिए, आइए वापस चलते हैं द्वारकानाथ जी के पास।

सवाल : आप गुरुदेव के साथ रहते थे, तो क्या आपने कभी उनके अंदर आध्यात्मिकता का एहसास देखा। क्या आपने कभी उनके कोई अभ्यास देखे?

द्वारकानाथ जी : मैंने बहुत बाद में इन चीजों पर ध्यान दिया, जब वो अपनी शक्तियों में आ गए थे। हालांकि हम बचपन में इतने साल एक साथ रहे, इकट्ठे रहे मगर हम ये जान नहीं पाए कि ये क्या चीज हैं। बचपन में ही ऐसे कई करिश्मे कर देते थे कि पता नहीं लगता था कि यह

क्या कर दिया इन्होंने। कभी-कभी रात को हम सो जाते थे तब गुरुदेव उठते थे और अपने फोल्डिंग पलंग को खोलकर, कंबल ओढ़कर ध्यान करने लगते थे। तब तो पता नहीं चलता था कि वो क्या कर रहे थे। जब सुबह होती तो देखते कि वो पास नहीं हैं। कभी हम उठ जाते थे तो नागपाल उनसे पूछता था कि क्या कर रहे हो। वो कहते थे, "कुछ नहीं, आप सो जाओ, मैं पाठ कर रहा हूं।" हमने ये देखा था। ऐसी ही घटनाएं रोज होती थीं। जैसे हमारे पास पिक्चर की टिकट नहीं है और हमारे सामने आदमी खड़ा है, जिसके हाथ में तीन टिकटें थीं। ऐसी कई घटनाएं होती थीं।

सवाल : तो हमें कुछ और चमत्कारों के बारे में बताइए, जब आप उनके साथ रहते थे?

द्वारकानाथ जी : हम आगरा के रहने वाले थे - नागपाल जी और मैं। एक दफा, हमने आपस में बात की कि हमारी दो छुट्टियां हैं, तो आगरा चलते हैं। रात को हमने गुरुदेव को बताया कि सुबह गाड़ी से हमने तो आगरा जाना है, तो आप यहीं रहोगे। उन्होंने कहा, "अच्छा, आगरा जा रहे हो। मैं देखता हूं कैसे जाते हो।"

मैंने कहा टिकटें ले ली हैं, गाड़ी में बैठना है, तो उन्होंने कहा, "जाओ फिर। जाकर दिखाओ यह चैलेंज है। तो जब हम स्टेशन पर पहुंचे तो गाड़ी 5 घंटे लेट थी। तो हमने हिसाब लगाया कि दो ढाई घंटे का सफर है और 5 घंटे यहीं हो जाएंगे और अगले दिन आना है ऑफिस में, तो कैसे आएंगे? तो हमने टिकट वापस करने का फैसला किया। तो घर लौटकर हम जैसे ही सीढ़ियां चढ़े, तो वो देखकर हंसने लगे। हंसते तो थे ही। उन्होंने कहा, "मुझे अकेला छोड़कर आगरा कैसे जा सकते हो। दिखाओ जाकर!"

अगर मैं रेल मंत्री होता तो अपनी ट्रेन का समय प्रभावित करने और उसके साथ छेड़छाड़ करने के लिए मैं उनकी ट्रेन यात्रा पर प्रतिबंध लगा देता।

गुरुदेव अपना प्रभाव दिखाने के लिए अपने व्यंग्य को प्रभावी अस्त्र के रूप में इस्तेमाल करते थे। मैंने उन्हें कई मौकों पर ऐसा करते देखा है। ऐसा लगता था कि वो मजाक कर रहे हैं, पर दरअसल उनका वार सही निशाने पर लग रहा होता था।

द्वारकानाथ जी एक अलग विचार के साथ अपनी कहानी जारी रखते हैं,

सवाल : हर मंगलवार गुरुदेव आपके साथ मंदिर जाते थे। वो हमेशा मंदिर के बाहर खड़े रहते थे और आप अंदर जाते थे।

द्वारकानाथ जी : हां नागपाल और मैं शिव के भक्त हैं। हम आगरा में थे। तो हर सोमवार हम वहां ज्योत जलाने जाते थे। सुबह वक्त नहीं मिलता था, तो शाम को हम जाते थे। जब हम पहाड़गंज आए तो वहां भी एक शिव मंदिर था। तो हमारा नियम था, वहां जाने का। हम गुरुदेव को भी साथ ले जाते थे। कहते थे चल भाई रजिंदर तू भी साथ चल हमारे। तो जब हम मंदिर पहुंचते थे, तो नागपाल जी और मैं अंदर जाते थे। जब हम उनसे अपने साथ अंदर आने को कहते थे तो वह मना कर देते थे। कहते थे आप जाओ। हमें ये अजीब लगता था, क्योंकि वो भी शिवजी के पुजारी थे। और वो जो पाठ करते थे, वो शिव जी का ही पाठ करते थे। तो ये एक अजूबा है, कुदरत का खेल है कि हम दोनों शिवजी के पुजारी थे और वो भी शिवजी के पुजारी। तो हम सब इकट्ठे मिल गए और हमें ऐसा लगता था कि जैसे कोई जहान मिल गया, कोई चीज मिल गई हमें।

गुरुदेव बाद के वर्षों में भी शायद ही कभी मंदिर गए। और बहुत कम मौकों पर जब भी वो गए, तो वो बाहर ही इंतजार करते थे। जबकि उनके साथ गए बाकी लोग दर्शन के लिए मंदिर में जाते थे। हालांकि अपने शुरुआती वर्षों में वो मंदिरों से दरगाह तक खेलकूद करते हुए दौड़ते-भागते थे। वो उनकी उस वक्त की यात्रा थी, जब उन्हें अपनी वास्तविकता का एहसास नहीं था। आगे महागुरु के उदगम के बाद वो ऐसे कई देवताओं के सहयोगी बने, जिनकी वो बचपन में पूजा करते थे।

अंततः वो अपने इस सफर में बहुत दूर तक गए और शिव भक्त से शिव का स्वरूप बने, बिल्कुल उन महान आध्यात्मिक आत्माओं की तरह, जो उनसे पहले आए थे।

सवाल : आपके लिए वो दोस्त से गुरु कब बने?

द्वारकानाथ जी : बहुत देर बाद। हम बचपन में एक साथ रहते थे, एक दूसरे के जूते पहनते थे, एक दूसरे की पतलून पहनते थे, इकट्ठा खाते थे और सब साथ करते थे। तो जब उनके गुरु बनने के बाद हम गुड़गांव आए तो अंदर से मन नहीं होता था, लगता था यार ये तो दोस्त है,

हम इसे गुरु की तरह कैसे देखें। असल में बहुत देर बाद मुझे अंदर से ये एहसास हुआ मैंने कितनी गलती की... मैं अपना बता रहा हूं नागपाल तो उनके साथ ही रहता था। मैंने इतनी बड़ी भूल कर दी। तो एक दिन गुरुदेव से मेरी मुलाकात हुई। तो मुझसे कहने लगे कि यहां आकर मेरे पास बैठ। मैंने कहा, नहीं अब नहीं बैठ सकता। अब तो मैं नीचे बैठूंगा। जब भी उनसे मिलते थे, तो मेरा शरीर कांपने लगता था और मेरे रोंगटे खड़े हो जाते थे। लगता था जैसे कोई चीज मिल गई। यह उनमें सबसे बड़ी खासियत थी यदि उनके पास कोई रोता हुआ आया है या कोई गुस्से में आया है कि मैं ये बोलूंगा, वो बोलूंगा गुरुदेव से, तो अंदर आते ही और उनके पास बैठते ही वो सारी चीजें खत्म हो जाती थी।

एक दोस्त से दुश्मन हो जाना तो बड़ी आम कहानी है। लेकिन एक दोस्त से एक अनुयायी और फिर भक्त हो जाना आम नहीं है। यह द्वारकानाथ जी का बड़प्पन और विनम्रता थी कि उन्होंने चार साल तक अपने कमरे में साथ रहने वाले इन शख्स को अपने गुरु के रूप में स्वीकार किया।
बहुत खूब!

एक ऐसा शख्स, जो लाखों लोगों को प्रभावित कर सकता हो, उसके लिए प्रभावी संवाद बना पाना कोई बड़ा काम नहीं था। हालांकि उनका जन्म और परवरिश बड़े सादगीपूर्ण माहौल में हुई और उनका काम भी कुछ ऐसा नहीं था कि लोग उस पर ईर्ष्या करें, लेकिन तकदीर का खेल निराला था जिसने गुरुदेव को भविष्य के लिए तैयार किया।

उन्होंने अपनी आध्यात्मिक शक्ति का प्रयोग ना करके अपने व्यक्तित्व और हास्य से लोगों का दिल जीतने की कला हासिल की थी। उनकी निडरता, दूसरे धर्मों को अपना मानने की विनम्रता, उनकी शरारत और उनके ऐसे बहुत-से गुणों से मिलकर ही वो ढांचा तैयार हुआ, जिस पर एक दिन महागुरु नाम की भव्य इमारत खड़ी हुई।

गुरुदेव कहलाने वाले इस शख्स को देखकर एक शायर शायद यही कहता...
कोशिश भी कर उम्मीद भी रख रास्ता भी चुन
कोशिश भी कर उम्मीद भी रख रास्ता भी चुन
फिर इसके बाद थोड़ा सा मुकद्दर तलाश कर
मुकद्दर तलाश कर